श्रीगणेशायनमः ।

अथ श्री हरिश्चन्द्रलीला ।

दो०-शिवसुतचरणमनायके, धरिसरस्वतीकाध्यान ।
हरि भक्तन सिर नायके, लीला रचूं सुजान ॥
प्रथम सुमिर श्री सारदा, धरूं कृष्णकोध्यान ।
हरिश्चन्द्रलीला रचित, सुन्दर कहत बखान ॥
सो०-पुरी अयोध्या बास. नृपतिबसतहरिश्चन्द्रइक ।
नीत निपुण हरिदास. सुन्दर सतवादीमहा ॥

नृपति पुनीत यज्ञ नित करही ॥ हर चरणारविंद उर धरही ॥ टेक ॥ वेद वेदान्त सार गहि लीना । हरिजन भक्त ज्ञान उर चीन्हा ॥ तासुपुत्ररोहितास पियारो । अति धर्मज्ञशील अतिभारो । तास नाम नृपतिकी नारी । पतिव्रत धर्मकी पालनहारी ॥ सुन्दर यज्ञ अनेक कराये । पिछली यह मख अति शुभदाये ॥

नारदजी आगमन ॥

दो॰—नारद मुनि आवत भये भूप यज्ञ के मांय ।
देखत नृप ठाढ़ौ भयो हाथ जोर सिरनाय ॥

सो॰—धन्यधन्य महाराज आज कृतारथ मैंभयो ।
बोले द्विज महाराज चिरंजीवरहो भूप तुम ॥

समाजी वचन ॥

दो॰—सतवादी हरिश्चन्द्र नृप करतसुधर्म दृढाय ।
सुरपति सिंहासन कँप्यो थरथराय थर्राय ॥

इन्द्र वचन

दो॰—महा सोचबसइन्द्रसुर पुकर पुकर जियमाय ।
सिंहासन किसअर्थयह हाल्यो अतिघबराय ।

समाजी वचन

दोहा—नारद पहुंचे स्वर्ग में इन्द्र रह्यो पछिताय ।
सिंहासन कैसेहल्यो सुरनते पूछी जाय ॥

इन्द्र वचन

दो॰—तेतीसकोटि जो देवता इन्द्रने लिये बुला॰ ।
सिंहासन कैसे हल्यो मोते कहो [illegible] ।

दो०—इतने में नारद ऋषी, हरि गुणगावत आय।
कहने लगे सब भेदही, मन प्रसन्न हरषाय॥

नारदजी वचन.

सो०—सुनो इन्द्र सुरराय. समाचार तुमसे कहूं।
हरिश्चन्द्र भूप कहाय. मृत्युलोक के बीच में॥
यज्ञ करत हरषाय. मन बच कर्म औ धमते।
कीजै कछू उपाय. नहीं स्वर्ग तुमसे छिनं॥

सभाजी वचन

दो०—सोचभयो महा शक्रकूं, कीजे कहा उपाय।
विश्वामित्रहि तब कह्यो, बार बार हरषाय॥

विश्वामित्र वचन कवित्त

सुनो महाराज देव देवनके देव ऐसो सोचकाहेको जो हृदय माहिं कीजिये। केती यह बात बडी जाको आप सोच करत करूं तुम काज आज मोय हुकम दीजिये॥ राजा और रानी वाके सुत हूको देखं जाय छिनमें डिगाऊं सतमान मेरीलीजिये। इन्दर सो सत्यबात मानोंकही मेरीनाथ औरते नहोय काज व्यर्थ तन छीजिये॥

इन्द्र वचन ।

दोहा–ठीकसत्य मुनिबात यह, जाउअयोध्याग्राम ।
अति प्रवीनमहा चतुरतुम, करोआजमोकाम ॥

॥ समाजी वचन ॥

दोहा–चले ऋषी कर हर्षमन, आये अवध मँझार ।
हरिश्चन्द्र के बाग घस, सूकरतन लियोधार ॥
सो०–दीये वृक्ष हटाय, विघ्न अनेकन ऋषिकिये ।
गये भूपपै धाय, रखवारे घायल भये ॥

वार्ता–विश्वामित्र अवधपुरी में आय मनमेंसोचने लगे किअब कोई ऐसा उपाय करें जासे राजा एकान्तमें मिले तब वाय छलूं ये विचार शूकरको रूप धारण कर राजाके बागमें गये समस्त बागकूंउखार रखवारने कूं घायल कियो ॥

सो०–माली अतिदुख पाय, हाथजोर नृपते कह्यो ।
आयो एक बाराह, ढाय बगीचा जिनदियो ॥

राजा वचन ।

दोहा–अरे भजो एक वेगभृत, लाओ अश्वसजाय ।

धनुषवान मोकर देओ, मैं देखों ताय धाय ॥
सो०—कह्यो भूप समझाय, सेना पतिहि बुलाय के ।
लेउ बाग घिरवाय, सूकर वह भगजाय नहिं ॥

समाजी वचन ॥

दो०—सूकर लखि नृप को भज्यो, महाविकट बन मांय।
घोडा नृप पीछे दियो, चाबुक मार भजाय ॥
सो०—भाज्यो बनी मझार, शूकर ते मृग है गयो ।
ढिंग कन्या बैठार, भेष पलट द्विज बनगयो ॥
दो०—मृगते ब्राह्मण बनगयो, बैठो बनी मंझार ।
प्यास लगी नृपराज को, भजत भजत गये ह्वार ॥
सो०—कन्या एक शुभ बाल, द्विज बैठो नृपने लख्यो।
पूछन लगो हवाल, डाट दियो घोडा तहां ॥

राजा वचन

दो०—सुनो विप्र महाराज तुम, तुम्हें नवाऊं माथ ।
जो देखो मृग तुम कोई, हमें बताओ नाथ ॥
सो०—नृपको लागी प्यास, पूछन ब्राह्मण ते लग्यो ।
सुनो मेरी अरदास, नाकढते मृग तुम लख्यो ॥

ब्राह्मण वचन राग गुंगथपान

सुनो नृपति महाराज वचन कहौं सत्य विचारी। अटकोमेरोकाजआजहरिश्चन्द्रसोंभारी।हैंमेरेकन्या चारतिनके मैं ब्याहरचाऊं। दानद्रव्यके काज आज हरिश्चन्द्रपै जाऊं॥मैं नाहिं देख्योहिरन फिकर मोय धनकीभारी।फिरे हाथ मैं करूं सुता मेरेहैं क्वारी॥ सतबादी हरिश्चन्द्र सुनों मैंने बडदानी।सुन्दर तुम कहां रहोकहोतुम सत्य बखानी॥

राजा वचन राग गुंगथपान

हाथ जोर सिरनायं भूप अस वचन सुनाये।अहो अहो महाराज धन्य,मोय दरस दिखाये॥ मेरोही हरिश्चन्द्रनाम सुनो तुमसत्यकृपाला।जो मांगो सो दउं चलो घर परही दयाला॥ करन अखेट काज आज यहां आयोसवारी।याते मोको भई बनहिं में तोहि अवारी॥ जब करिहों स्नान प्रथम तुम्हें दान दिवाऊं।जबहि करों जल पान अन्न इतने नाहिं खाऊं॥ बोले नृप महाराज महल निज चरण

पधारो । जोर हाथ नाऊं माथ चलो सग काज ह- म्हारो ॥ सीधो सामा लेउ रसोई मम गृह कीजै । घर ठाकुरको भोग महाप्रसादहि लीजै ॥ सतिप्रसादहि चहत नाथ सुनों बिनती मेरी । दर्शन तुमरे करे रानी तुम चरणन चेरी ॥ चलूं नहीं नृप महल दानदेउ यहांहीं मोकूं । चिरंजीवरहो पुत्र विष्णुखुश राखै तोकूं ॥ नाथ कहा मैं दऊं यहां नहीं कछु मो- पासा । तारी और लगाम करो संकल्पहि खासा ॥ सुनो नृपति सुज्ञान यहांसब कछु तुम पासा । आ- ये करन अखेट भई मम पूरन आसा ॥ पुनि हँसि बोले भूप विप्र कछु मांग बहोरी। द्रव्य जो दऊं अ- घाय चलो मेरेमहलन ओरी ॥ तारी और लगाम अहो द्विज द्रव्यहै थोरो । सुन्दर जानत नाहिं विप्र तू है अति भोरो ॥

वार्ता—ब्राह्मण कहने लगो हेराजा । आपने सकल पदार्थ कर राखे कोईबात कीतेरे कमी नहीं है परन्तु

मेरी कही मानों यामें आपको ही लाभ है ताते याह समय के माहीं एक मुहुर्त के बीच में ताली और लगाम संकल्प कर देउ, अब मैं तेरे प्रति तेरो लाभ वर्णन करत हूं ॥

कवित्त ।

सुनों महाराज यामेंकारण है और एक चार घडी मावस सो सोमबारी सारी है ।-महाभारीयोग यती देवन को दुर्लभ जोताते मैंने तारी और लगामही निहारी है ॥ कीजिये स्नान भूप सरयू निकट वहैं पर्व जाय चूक तौपै चूक अति तिहारी है । सुन्दर नृप कीजे मोहि दान आज पुत्र चि.जीव रहो आशिषा हमारी है ॥

दोहा—जो जाओनृप न्हलको, पर्वयह जायबिताय।
यातेअश्व लगाम ही.और चाबी दुउ महाय॥

॥ राजा वचन ॥

दो०-बोलोहि ज संकल्प तुम. है प्रसन्न मनमांय।

जलप्रवेश भूपति कियो. भानुहिशीशनवाय ॥

सो०-कर प्रवेश जलमाय, हो प्रसन्न हरिचन्दनृप ।
विलंब न नेकलगाय, अबबोलो संकल्प द्विज ॥

विप्र वचन

दो०--पूरब मुख नृप कीजिये. दक्षिणकरलेउ वारि ।
हृदयध्यानहरिकोधरो, निजकुलगोत्रउचारि ॥

राग गुंगूक्वान

तारी और लगाम नृपति दक्षिण करलीनो । जल संकल्प्यो तभी अर्घ सविताको दीनों ॥ पुनि बोले द्विजराज सुनों नृपबात हमारी। देउ मोयकछुऔर जोमरजी होयतुम्हारी ॥ जो मांगो सो दऊं अरे द्विजझूठ न भाखुं । तनदारा धनधाम सभी विप्र न हित राखुं ॥ एहो नृपति पायो माल दक्षिणामें नहीं पाई । सुवरण देउ सौ भार दक्षिणा मेरे ताईं ॥ पुनि लीनो पंकल्प भूप कञ्चन सौभारा । गहिपकरी द्विज फेंट कह्यौ देउ हाल मुआरा ॥ रह्यौ न तुमपै

कछू देख नृप करो विचारा । सुन्दर राजओरपाट भया धनधाम हमारा ॥

कवित्त ।

राज और पाट धन धाम सब मेरो भयो तारीतें संकल्पकरी तोपेकहा रहायोहै । टापतो तुरंगकीमें भूमि सब आय गई प्रथम लगामकोमें दानहीकरा यो है ॥ एक तेरी रानी और बेटा रोहितास रह्यो तेरो बच्यो तन जासों पुण्य करायो है । सुन्दर कहत द्विज सुनो हो वचन मम हार जाओ सत्य अही सर्वस गमायो है ॥

दो०–तब भई नृपको चेतना, मैं दीनों सर्वस्व ।
बांयेकर गूँठी बची, हीरा जटित सो अश्व ॥

सो०–सुनो श्रीमहाराज, अँगूठी चालीसभारकी ।
ये लेउ मोते आज, साठभार बाकी रह्यो ॥

विप्र वचन

दो०-अरे नृपति भयो बाबरो, कह्योजो मेरो मान ।
हारोसत्यकरोनांयतुम, नहिंधनसम्पतिहानि ॥

सो०–मान हमारी बात, अरे भूप भयो बावरो ।
नहिंधनसम्पतिजाय,हारोसतकरोनांयतुम ॥
लावनी–नृपकही सुनो महाराज अजी संसार में क्या कुछ लेना । एक सत्य वचन रहि जाय और कुछ लेना है ना देना ॥ क्या रहना हो सदा जगत भूतकी सम्पत सब मिटजाई । धन धाम पुत्र परिवार यार हित संग कोई नजाई ॥ सब ठाठपडा रहजाय हाय धनघूरमें सब मिलजाई । मेरो सरबस जाय तो जाय रहै एकसत तो संगसदाई ॥ उड़ान द्विज चलो महलके माहीं । नेक रानी ते बतराई ॥ धन दौलत सारी लेउ और लेउ सजी सजाई सै-ना ॥ नृपकहीसुनोमहाराज० ॥द्विजधीरजमनमेंधरो तुमारा रहा साठभार सोना । मैं झूठन जानूं बोल फेर मुख ऐसे वचन कहोना ॥ मैंने संकल्प जो दियो समर्पो रविआगे जल दौना । बाचासोहारूं नहीं पिछारी होनहार मो हो होना ॥ उड़ान ॥

सुतनार बेच मैं डारूं। पर वचन कभी नहारूं ॥ सिर काल रह्यो मंड़राय हुस्यारी हरदम इसकी रहना ॥ नृपकही सुनो महाराज० ॥ २ ॥

वचनों के बांधे खडे सिंहसे बली महारणधारी । जल ऊपर थापीभूमिउधर आकाश दियेरचन्यारे ॥ औरशेषभार सिरधरे वचनतुम मानोंसत्य हमारे ॥ उड़ान ॥ करपकड चले द्विजराई । भग अवधपुरी समुहाई ॥ घसेडचोढी भीतरजाय कुमर रोहितास से ऐसे कहना । नृपकही सुनों महाराज० ॥ २ ॥

तुम सुनो कुमरजीबात अब यहमहल जोखाली कीजे । और रानीए लेउबुलाय वचनसमझायजो ऐसे दीजे ॥ मैंहार कोलजोगया माल धनसर्वस द्विजही जीको ॥उडान॥ येहैंवेही द्विजराई । जिन मोय संकल्प लिवाई ॥ सुन्दर कहसुत कहा कहूँ कनक मोपै तिलभरकहूँरह्योना ॥ नृप कही सुनो महाराज० ॥ ४ ॥

दोहा—हे माता अबसुख तजो, विपतासे परचोकाम।
नृपति कियोसंकल्पसब, राजपाट धनधाम॥

राग कलिंगड़ा।

मेरी मानोरी महतारी। छांडो महल तिवारी॥
नृपति गये आखेट करन को तहां विप्र एकपायो।
राज पाट सँकल्प करो सब बाकीकछु नरहायो॥
मेरी मानोरी० ॥ पूतसपूत वही या जगतमेंतातके
ऋणहि चुकावे। नारि कुलीन सती पतिभरता
पतिहित तनहि गमावे॥ मेरीमानोरी महतारी०॥
वेदन धर्म पुत्र को गायो श्रुतिको कहत पुकारी।
पिता कर्जजो सुत नचुकावे सो कुपात्रतनधारी॥
मेरी मानोरी० ॥ तात यही सारसुन माता पिताको
ऋणहि चुकाऊँ। साठभार सुवरणजोदेवे ताकेकर
बिकजाऊँ॥ मेरी मानोरी० ॥ उठोबेग अबदेरकरो
जिन द्विज पकरेनृपहाथा। सुन्दरदान दिये बिन
विप्रहि करो न अन्न जलनाता॥ मेरी मानो०॥

रानी वचन ब्राह्मण प्रति ॥

दोहा–रानी उठि तहँते चली, पहुंची द्विजके पास ।
हाथजोर सिरनायके, असम्मुख वचन प्रकाश ॥

कवित्त ॥

दोउ करजोर सिरनाय रानी ऐसे बोली सुनों महाराज यह विनती हमारीहै । बेटा रोहितास और मोय संग लीजे आप बेचो साठभारमें जहां मरजी तिहारी है ॥ खाऊं नहीं अन्न और पानी मैंतो जब पीऊं दऊं दक्षिणा सो साठभार सारी है । सुन्दर करम गति देखो न टरत टारी बन में विचारी रोई जानकी सी नारी है ॥

विप्र वचन रानी प्रति ॥

दो०–मत पावे दुखतू त्रिया, महलन की सुकमार ।
राजा को समझायदे, नेक वचन जाय हार ॥
शहर शहर लीये फिरूँ, घर घर द्वार बजार ।
कहो सुख हमहारेसतहि, वृथाहोयक्योंख्वार ॥

रानी वचन ब्राह्मण प्रति कवित्त ॥

सुनो महाराज द्विजराज अर्ज सत्य सुख केतो

जगत जीवनको पापसिर ढोवैहै। झूंठेनकी जीभन को यम छेदें भालनसों महाभारीपावे दुखसिरधुन रोवै है ॥ ब्याहकी बरात ज्यों बजार लूटें पूतरी हाय२लुटवाय व्यर्थ तन खोवे है। सुन्दर कहोजी लाखबार चाहे विप्र आप जाय न हमारो सत्वदेह कोन जोवै है ॥

विप्र वचन कुमर प्रति ॥

दो०—सुन बेटा तु चतुर अति, नृपको दे समझाय।
सत हारे नाहीं करे, व्यर्थ बिकनको जाय ॥

सोरठा—पावो कष्ट अनेक, घर २ डोलो भटकते।
सत की छांडो टेक, नाहींते बिगरैं न कछु ॥

कुमर वचन

दादरा—क्या मोको समझावैरे ब्राह्मण ॥ दुनिया दोलत माल खजाना संग नहीं कछु जावे। यमके दूत कण्ठकोघेरें फिरपीछेपछतावैरे ब्राह्मण ॥ सत्य असत्य संग जगसाथीहै हरिनामसहारा। महा क- ठिन भवसिन्धु प्रबल अति साराहै धुन्ध पसारा

रे ब्राह्मण ॥ चलना दूर देश नहिं अपना गांठ न खर्च छदामें । काम क्रोध मदलोद मोह यहठग २ राह भुलावैरे ब्राह्मण ॥ कहांजाय आवे पुनि कहँते अमर ब्रह्म सुखछावे। सुन्दर वैद्य वेद्य नांहि मिलता जो यह भेद बतावैरे ब्राह्मण । क्या मोको समझावैरे ब्राह्मण ॥

कुमर वचन विप्र प्रति

दो०—बार बार अब जिनकहो,हमसे तुम यह बैन।
जी चाहे बेचो जहां, हमें उजर कछु हैन ॥
संग लक्ष्मी है सदा, सत्य रूप भगवान ।
सत छोडो जिनसो गयो,घोर नर्कनादान॥

विप्र वचन

दो०—चलोउठो तीनोंपरो,काशी सडक किनार।
बेचूं जहांग्राहक घने, बीच शहर बाजार ॥

समाजी वचन।

दो०—तीनों प्राणी चलदिये,नृपति पुत्र औरनार।
महाप्रसन्न अति, मगनमन सत्य हृदयमेंधार ॥



कवित्त ।

राजा और रानी सुत तीनों प्राणी चल दिये
रोवैं नगर नरनारी छाती फार फारके। ऐहो विध
कर्मरेख न मिटत मिटाई नाहिं कैसी विध विपतदई
नृपतिको टारके॥ रानी सुकुमारीजो विचारी पै न
चल्योजाय ठौर २ बैठजाय क्षण २ हारके। सुन्दर
बनायके बिगारे प्रभू काऊकी ना जीवतही मरज्यू
आपेको निहारके॥

दो०—पग २ पै बैठत चलो, अभी मुकाम है दूर।
काशी यहांसे दूर है, सुनिये अर्ज़ हजूर ॥

रानी वचन दादरा ॥

धीरेचलो मैं हारीरे ब्राह्मण । दोउ पगनम्हारे छाले पड़ गये प्यास लगीम्हाने भारीरे ब्राह्मण ॥ केतीदूर थारी काशीनगरी कहो मुख सत्य उचारीरे ब्राह्मण। कमल बदन अकुलाय कुमरको नृप नेक लेउ पुचकारीरे ब्राह्मण ॥ जो अक्षर विधाता लिख दियो सो नहिं टरते टारीरे ब्राह्मण । प्राण रहैं चाहैं जांय हमारे पर नहिं हम सत हारीरे ब्राह्मण ॥ सुन्दरवैद्य विपतिको टारे गिरि गोवर्धन धारीरे ब्राह्मण । धीरे चलो मैं हारीरे ब्राह्मण ॥

वार्ता—विश्वामित्रने मनमें विचारा कि राजारानी और कुमर तीनों सत्यको नहीं छोडते हैं और प्यास के मारे इनको जीव घवडायो जात है तातें इनको काहू विध जल पिवाय इनके सत्यको

खण्डन करूं ये विचार अपनो रूप बदल लोटा डोरले कुआपर बैठ गये ॥

दो०—लोटा डोरी हाथमें, रच माया द्विजराज ।
कहन वचन नृपते लगे जलपीयो महाराज ॥

विप्र वचन राजाप्रति कवित्त ॥

एहो नृप बैठो नेक छायालेउ वृक्षनकी ठण्डोपिं-ओ पानी खेंचूं लोटा ताजी मांज के । महा भारी धूप पड़े मुखपै पसेव छायो रही थोरी दूर काशी पहुंच रहियो सांझके ॥ ऐसो कहा काज जाते एते घवडाय रहे कहो समझाय सब सत्य हृदय मांझके। सुन्दरजो काया राखे धर्म या जहान बीच याते पियो नीर सुखदेउ काया काज के ॥

राजा वचन झुंगधपान

मैं जल पीऊं नाहिं सुनो द्विज बात हमारी । दीजे यह आशीश बिकें जो सुत औरनारी ॥ जोतीनों बिकजांय सत्य मेरो रहि जाई। सत्य एक रहजाय जाओ चाहेप्राण भलाई ॥ पानी कैसे

पीऊं दान द्विजकों नहिं दीनों। सुन्दर समझ विचार सत्य संकल्पहि कीना ॥

रमाजी वचन

दो०–ऐसे काहि नृप चलादिये, जिनजलपीयोनाहिं।
धीरे २ चलतही, रानी पहुंची आय ॥

विप्र वचन रानीसे

दो०–सुन रानी तरावती, बैठ जो छायामाय।
पानी ठण्डा पीजिये, जो शरीर सुखपाय ॥

सो०–तुम्हरे नृप भर्तार, रानी पानी पीचुके।
सुनसुन्दरिसुकुमारि, पियोनीर करोसोचना॥

रानी वचन गुणपान ॥

सुनो विप्र महाराज नीर हरगिज नहिं पीऊं।
प्राण रहो चाहे जाउ सत्य तज कबलों जीऊं॥
नृपहि पियो तो पिओ उन्हें सबरी सामर्था।
हम पतिव्रता नारि वह मेरे स्वामी भर्ता ॥
देओ यही अशीश नाथ हम कहूं बिकजाईं।
तब हम पावें नीर उऋण द्विजते ह्वै जाईं ॥

राग गुंगधभान ॥

पुनि पीछे रोहितास कुमर आये कुँआ पासा ।
द्विजने हाथ बढ़ाय कह्यो पानी पिओ खासा ॥
राजा रानी पिया यहां पर ठण्डा पानी ।
काया पावै चैन होय नहिं यामें हानी ॥
शीशनाय ढिगजाय कुमर यह वचन सुनाया ।
आप कहो सो सत्य वचन तुमरो मन भाया ॥
वे मेरे माता पिता करैं सो उन्हें सोहैं ।
सत मैं छोडों नहीं काय तन और का होहै ॥
ऐसे कहि चल दीये कसरने रस्ता लीना ।
सुन्दर वैद्य सोधन्य जिनन यह हठप्रण कीना ॥

समाजी वचन ॥

दो०—अति व्याकुल तीनों जने; काशी पहुंचे जाय ।
सुन्दर जो विधिने लिखा, काऊ पै ना मिटाय ॥
सो०—चौपड बीच बजार, द्विजने ठाडे कर दिये ।
रोवैं नर और नार, देख रूप तीनोंनको ॥

विप्र वचन ॥

दो०—कर उठाय द्विजने कह्यो, सुनो सकलनरनार ।
मैं बेचूं इन तीनकूं कंचन भारहि भार ॥

सो०-सुन्दर कान्ति अनूप, चन्द्रवदन मृगलोचनी।
देखत याको रूप, रती शशी शरमात हैं॥

दो०-जस नारी हरिश्चन्द्रकी, तीनलोक तसनाय।
महाभवानी पतिव्रता, सत्य सती सुखदाय॥
तरावती जेहि नाम है, हरिश्चन्द्रकी नार।
ठाडी वीच बजारमें, देखत सब संसार॥
नृपसुत दारा पुर अहे काशीजी जेहि नाम।
रामनाम मुख रट रहे, और कछू नहिंकाम॥
त्राहि२ सब कर रहे, काशीके नरनार।
लिखोजोविधिकेअंकको, सकैकौनविधिटार॥

विप्र वचन॥

दो०-अरे होय गाहक कोई, जो या पुरके माहिं।
तो मोते सादा करो, है प्रसन्न मनमाहिं॥

कवित्त॥

नगरीअयोध्या नामराजाहरिश्चन्द्र येतो ओरयाकी
रानी यह तारा सुकमारी है। बेटा रोहितास पढ़ो
लिखो होशियार जाकी कर्मनकी रेख कछु टरत

न टारी है ॥ बीस २ भार सुवर्ण सो एक एक को है जापै होय लेय सोई मनमें विचारीहै । सुन्दर करम गति विधि जैसो लिख दियो भोगनो पडैगो सब देह दण्ड भारी है ॥

दोहा–गौर वरण नवयोवनी, कञ्चन रूप अपार ।
सुन्दर त्रिय हरिश्चन्द्रकी, रोवैखड़ी बजार ॥

कवित्त ॥

नैननसों नीर जारी रोवैसो विचारी नारी बिपता को संगी नाहिं कोई संसार में । सुखमें अनेक हितू चित्र और विचित्र सम नीके नीके बोलें बोलीमीठी सी ढारदें ॥ दीनबन्धुदीनानाथ टेरजो हमारीसुनों भेजो बेग गाहक सो लेय साठ भार में । सुन्दरसो नारी देख गणिका एक बोल उठी कहो विप्र मोल कहा बैठे विचार में ॥

गणिका वचन दादरा ॥

बीसभार लेउ सोनारे ब्राह्मण। यह नारी हमको देदीजे याकी आसोंमें टोनारे ब्राह्मण ॥ बैठीमोज

करो पलंगनपरखाओ मिठाई दौनारे ब्राह्मण।पान
सुपारीमेवा मिश्री मेरे कछु कमीनारेब्राह्मण॥ मारी
लोट गिलम तकियनपर पर पुरुषनसंग सोनारेब्रा-
ह्मण। सेवा करें टहलनी तनको दुख सो घर कछु है
नारे ब्राह्मण। सुन्दर करत बीनती द्विज सों मोय
याके हाथ न बेचोरे ब्राह्मण॥

विप्र वचन॥

दोहा—हैगनिकाअति चतुरतू,जोतें कह्यो सुखमोल।
बीस भारला द्रव्य अब,गांठ गिरहसे खोल॥

लावनी।

सत बादिन तारा नारिखडी बाज़ारनैनभररोवै।
हाय अब मैं कैसीकरूं किसब गनिका को संगपै न
होवै॥बिधि कीनी सोतैंभली गलीरझाडूसबबानि
आवैापानीभरलेकेआवंक्षणकमैंजहांकहुंमोयपठावै,
महा कठिन कठिनते कठिन कठिनते कठिन काज
कर आऊं। मेरीहाथजोरसुनोअर्जीविप्रजी गनिका
संगनजाऊं॥उड़ान॥ परपुरुष न मोयसुहाईमेरो

पतिव्रत धर्म न सांई ॥ कुछ सोच और समझविचार
अरे द्विज जागहै कैसोवै॥सतवादिन०॥ योंकहन
वेश्या लगी याकी मति हरी श्री गिरधारी। अरीतू
जिन चिन्ताकरै विचारी भोरी सी तू नारी॥ जल
भर लाइयो बडे भोर जोरसें कछु नाहींतोतेकरती।
विपता तेरी कटि जाय भटू क्यों नयनन में जल
भरती॥ उडान॥ नहींझूठे पात्र मजाऊं।पगनाय
री बीर दबाऊं॥ जो बने सो करियो टहल अरी
सब बात भला भल होवै॥ सत वादिन०॥२॥
द्विज कह्यो देउ सोय दाम गाम मोय जाना बडी
सवारी। यह है हरिश्चन्द्रकी नारि बडी सुकमार
ये कोमल भारी॥ घरतेबाहरनहींकढी विपतवस
तेरे हाथ बिकानी।दुखदैना इसको नहींबातमेरी
इतनी लेना ..नी॥उडान॥ दिया हाथ विप्रपक
राई।ले जावो यहांसे जाई॥ सब काम में है
हुशियार फूलकिया पतरी पतरी पोवै॥सत०॥३॥

चलिदई जो तारा नारि गह्योकर वेश्याने हरषाई। नेक मोढिग आ मेरे लाल अरे तोय छाती लऊं लगाई॥जो लिख दियो विधि अंकूर मिटतसोहरागि ज नहीं मिटाया।एक रह्यो सत्य सब जाउ अमर कह्यो किसकी जगमें काया॥ उडान ॥चिन्ता करि यो सुत नाहीं। ये वक्त न रहै सदाही ॥ जो कृपा करै जगदीश पुत्र सब बिपता पलमेंखोवै ॥सतवा दिन तारा नारि खड़ी बाजार नैन भर रोवै॥ ४॥

॥ समाजी वचन ॥

दो०—रानी सुत रोवत तजो, सरे बीच बाजार।
गनिकाके संग चलदई,बहैनयन जलधार॥

विप्र वचन

दोहा—क्यों रानी तु छोडती,नैनो से जल धार।
जोपावै कछु दुख हृदय,अबकहुवचनजाहार॥

रानी वचन विप्र प्रति॥

दोहा—है स्वभाव यहदेहको,सुनो विप्र महाराज।
दुखमें रोवै सुख हँसे, चहे कर लाखइलाज

सोरठा-मिले न अन्न अहार,लंघन चाहैं लाखहों।
परनसत्य हमहार,प्राणकाल चाहैआजजांय॥

समाजी वचन।

दोहा-गणिका गृह रानी गई,तजसुत ले पतिसोख।
सुन्दर अबआगे भनतजो चरित्र शुभदीख॥

सेठ वचन।

दोहा-बैजनाथ मम नाम है, रहूंजो याही ग्राम।
पै लडका मोय दीजिये,बीसभार लेउदाम॥

विप्र वचन।

दोहा-आउ सेठजी बैठिये, लेउ दोनों को आप।
यह बेटा रोहितास है, यह है इसको बाप॥

सेठजी वचन कवित्त।

यहां तो बनारस में वास मेरो सुनो विप्र नाम
बैजनाथ साहूकारी मेरो भारीहैहाथी और घोड़ा
रथ पीनसहू कई जोडी माल और खजानेकीपरत
न शुमारीहै ॥ एक नहीं पुत्र याते धूर सम सब
कहो कैसे चले नाम मम लौकिक संसारीहै। सुन्दर

सो याते आज गोद में बैठारो याहि भोगो पुत्र राज धूप छांह ना निहारैहै ॥

क्षमाजी वचन।

दो०-बीस भार कंचन विषे, बिके कुंवर रोहितास ।
सुन्दर मिटत न लेख विधि, होनहार यह पास ॥

सत्याजी वचन।

दोहा-रोवत नृप सतको बँध्यो, खड़ो विप्र के पास।
श्वपचभीरलखिसुरपरयो, सुन्दरविप्रहिदास॥

श्वपच वचन।

दादरा—कहि द्विज मोल भिखारी भूपको।
कलुआ नाम जातमेरी भंगी टहल हमारी भारी॥
टेक॥ बीस भार कंचन लेउ हम से औ तुम तुरत उच्चारी। घना चबेना सत्तू लीजे डारो शहर सवारी ॥भूपको०॥ मरघट जाय उतारो कफन लेउ जो कर ये जारी॥भूप०॥याकुरको कोतवाल मैं ही हूं इज्जत घनी हमारी।सुन्दर वैद्य भूप कहा सोचो कर्मन की गति न्यारी ॥भूप०॥

दो०-बीस भार कंचन दियो, मनमें अति हरषाय।
सुन्दर नृप चलेनीचवर, कर्म न रेख मिटाय॥

नाथ गति तेरी न जान परे। धर्म कियेते पाप होतेहै पापिन स्वर्गधरे॥ नृप नृग कहा कपट प्रभु कीनों गिरगट योनि धरे। शुक्र शिष्य को भला चहत हो ताकी आंख हरे॥ नाथ०॥
हिरनाकुश सुतको समझावै मौत कुमौतमरे। तारा बाम नृपति हरिचन्द की गनिका की टहल करे॥ नाथगति०॥ सत्यस्वरूप भूपसतबादी सुपच को नीर भरे। हायदई यह गति कहा तेरी भक्तहि भार जरे॥सुन्दर तुम गति महा अगम प्रभुभावई भ्रमर फिरे। बुरो भलो जैसे तसतेरो पुनि २ होत भरे॥ नाथ गति०॥

दो०-सुपच घड़ा नृपकोदियोऽपानी भरला जाउ।
देर ज़रा कीजों नाहिं, बेगी भर कर लाउ॥
घडा भरो दरसें धरो, फिर आयो ममपास।

तोय बताऊं हाटमें, बनियाकी सुखरास ॥
सुनो सेठजी ममवचन, लिखो बहीमेंनाम।
यह चाकर हमरो खरो,सौदा देउ बिनदाम॥
जो मांगे सो दीजिये, करिये मत इनकार ।
लेखोकर सब लीजिये,सब रुपया कलदार॥
सो०—नितप्रति लेउ तुलाय,या बनियांकीहाटते ।
मनमें मति सरमाय,जो चहियेसो लीजिये॥
दो०—तीन दिनाभये भूपकूं,कियो नअनजलपान।
सत्तू लेकर चल दियो, करन गंगास्नान ॥

द्विज वचन ।

दो०—नित्यनेम नृपनेकियो,रविको शीशनवाय ।
सत्तू घोरेगंगजल,द्विज एक पहुंचो आय॥
सो०—चिरंजीव रहो भूप आशिरबाद जोमैं दऊं।
लागि रहीमोयभूख तीनादिनाभये अन्नबिन॥
रा०गु०—अहाअहा महाराज,वक्त नीकेपर आये ।
भली भई मैं आस-अभी कर नाय उँठाये॥

आधो सतुआ बांट भूपने द्विजको दीनों ।
कहन लगे द्विजराज अरे तैंने यह कहा कीनों॥
मेरो भरो न पेट भूख मोय लागी भारी ।
सुन्दर पुनि हरिचन्द्र अगारी करदई थारी ॥

वेश्या वचन रानी प्रति ॥

गनिका रानीतेकह्यो सुनि बांदी मेरी बात ।
गंगाजल भर लाउ तू बैठी कहा जम्हात ॥
शीश धरी गागर त्रिया चली गयन्दी चाल।
जल हिलोर घटको भरो बगदी ले उत्ताल ॥
रानी जल भर ले चली गागर सोहे शीस ।
सुन्दर विध रेखा अमिट मिटत न मेटै ईश ॥
सो०-जलभरलौटीनारि मारग घरको लेलियो ।
जात मिलो साहूकार जाघर सुत रोहतासहै॥

राना वचन सेठसे कवित्त ।

नैननते नीर बहै रानी कुशलात पूछे कहो पिता सेठ मेरे लालकी कुशलात है। कैसे रहे कहा करे रोवत कै मेरे लिये विधिने बिछोयो हाय कियो

एक साथहै॥निगरीको मोल कहा कायदा विदेश नाय सो२देयनारी पिता वेश्या विन बात है। सुन्दरकहत सेठ मेरी बेटी तुम गोइ इकलौता पुत्र बिन देखे न सुहात है ॥

सेठ वचन।

दोहा—सुन पुत्री मेरी बाततू,मतमन मनकरैउदास।
तोय वेश्याले लायके, राखूं तो सुत पास॥
गनिकाके गृहसेठजी तुरतहि पहुंचे जाय।
गनिका अपनो कथलै रानी देव गहाय॥
सो०—यह रानी दे मोय, पुत्री समझाहि राखिहों।
तेरी टहल नहोय मेर हरिसेवा करै॥
दोहा-मन प्रसन्न गनिका भई कह्यो देउ मोय दाम।
बैठी दिन भर यह रहै करे नहीं कुछकाम॥
सो०—सुनसुख अतिभयोसोयअहोसेठतुमभलकह्यो।
टहल न यापै होय निशदिन मैं झींकतरहूं॥

समाजी वचन।

दोहा-सेठ वेश्यातै लई रानी हाल जो मोल।
बीस भार सोनाःवणिक तुरत देत बिनतोल॥

रानी वचन कवित्त ॥

माता देख पुत्रको आनन्द भयो महामन धन्य२ सेठ तुम धन्य पितारामजी । जुग२ जीओजो अ-शीश तुम्हें देत मैंहूं अन्त समय बासकरो वैकुण्ठसे धामजी ॥ फूली २ फिरत मानों नवनिधि की ढेरी पाई एक पर भूप नहीं यही रह्यो काम जी । सुन्दर कहत ठाड़ो विधि करो भाग्य कब दैकैधन्य वाद लखें अयोध्या सो गामजी ॥

क्षमाजी वचन।

माता और पुत्रदोनों सेठही के धाम रहैं हर कों भजन करें ध्यानहीं लगायके । पूजा और पाठकरें भली भांति नित्य नेम प्रात काल न्हांय जांय गंगा हुं पै धाय के ॥ रोयदेत रानी और बेटा रोहितास कुमर सुध कर जाने कैसे काटे छिन भूप वहां जा-यके ॥ सुन्दर विधाता अंक विधये न मेटे जांय तीन लोक पति रोये बनोवास पायके ॥

दो०—जलभर नृप सत्तू लियो, बनियासेतुलवाय ।
मनीकरणका घाट पर, विप्र धसे जल मांय ॥
नित्यनेम नृप कृत्यकर, सत्तू जलहि घुराय ।
भोगसमर्पोविष्णुकों, पुनिद्विजपहुंचोआय ॥

॥ ब्राह्मण वचन ॥

दो०—हाय हाय भूखो मरो, भये तीन दिन रात ।
भेटा भयो न अन्नते, जी मेरो अकुलात ॥

समाजी वचन ।

दो०—अहो विप्र सुनिये अरज, तुम्हें नवाऊं माथ ।
है प्रसन्न भोजन करो. यह लेउ सत्तू नाथ ॥

राजा वचन ।

दो०—याविधि नितप्रति विप्रही, सत्तू छक गृहजाय ।
चालिसदिनभयेभूपको, अन्नमिल्योलतनाय ॥
सो०—नृपपेंचलोन जाय, शिथिलभई इन्द्रीदसों।
प्रभु को भूलत नाहिं, पीवत जलभर पेटही ॥
दो०—पी जल बांधो पेट नृप बड़ा लगायो हाथ ।
डगमगडगरूपगधर घटनलालधारओसाथ॥

राग शुंगधपान ॥

नृप बल बहुतकि करो घड़ा नहिं उठत उठायो ।
कितनेन ते कह पच्यो हाथ काहु न लगायो ॥
बिगरीका नहींमोल हाय कोई ढिग नहींआवै ।
भूप हृदय महा सोच सुपचआज बहुत रिसावै ॥
नैनन छायो नीर नज़र रानी पर जाई ।
नीर सेठको भरन तीर गंगा के आई ॥
सुन्दर नारी देख नृपति को शीश नवायो ।
परकम्मादे सात बहुरि अस वचन सुनायो ॥

रानी वचन ॥

दो०-सुनिपति सतमतछांडियो,सतछोडेपतजाय ।
सतकी बांदी लक्ष्मी,बहुरि मिलैगी आय ॥

राजा वचन ॥

दो०-हेरानीमैं क्या कहूं कह्यो कछू नहिं जाय ।
चालिसदिनभयेअन्नबिनघडाउच्योनहिंजाय॥
सो०-दीजै घड़ा उठाय हे रानी तारावती ।
मोपेउच्योनजायचालिसदिनभयेअन्नबिन ॥

वार्ता—हे महाराज आप दिन भर पानी ढोओहो क्या आपको सुपच खाने को नहीं देतहै यह सुन राजा बोलो हे रानी सुपच विचारने तो मोदीकी दुकान बताय दीनी है परन्तु जा समय मैं ठाकुरजी को भोग समर्पूं हूं ताही समय एक भूखो ब्राह्मण आय जायहै। सो वोसब पदार्थ वाकूं देदऊंहूं और केवल जल पीरकर कर चालीस दिन व्यतीतकिये पर आज मेरे प्राण कण्ठगत आय रहे हैं सोतू मेरे सिरपर घड़ा उठाय कर रखदे तो मैं ले जाऊं॥

राजा वचन।

सो०—दीजे घड़ा उठाय, हे रानी तारामती।
प्राण कण्ठगति आय, शिथिलभईइन्द्रीदसों॥

दो०—रानीजी नेक मो घड़ा, दीजे हाथ लगाय।
बिगरैको कछु मोलना, देखलोग विनखाय॥

॥ रानी वचन ॥

दो०—राजाजी मैं क्या करूं, धर्म न छोडो जाय।
मोपै गागर सेठकी, तुमपै सुपच की हाय॥

राजा जी छीऊं नहीं, तुमरी गागर आय।
जो तुमरी गागर छिऊं, धर्म हमारो जाय॥
सो०-दऊं उपाय बताय,गोंडन पर धरिये घड़ा।
लीजे फेर उठाय,या विध धरियेशीश पर॥
दो०-याहीविधनृप घटधर्‌यो,सुपच गृहगयोधाय।
महा क्रोधभयौ सुपचमन,गारीदेत रिसाय॥

सुपच वचन॥

दो०-महा आलसी जीव तू, सुनरे हरिया भूप।
घर की रुम्हरे टहलना, तोपै ऊत कपूत॥
तोंपै कछु नहीं कामहो,मोपै नारि रिसाय।
यहांतजा समशान बिच, मृतक वस्त्रलेधाय॥
पांचटका करके लेओ, मुर्द घाट परजाय।
और उतारो वस्त्र वह, कफ्फन नाम कहाय॥
नृपको देखो सुपचने, पुनि दई टहलबताय।
मुर्द घटा मणिकर्णका,मुर्द घाट पर जाय॥
नृपचाले मणिकर्णका, घाटहि बैठे जाय।
सुन्दर वैद्यजो भनतअब,आगे कथाबुझाय॥

दो०—पूजाकरत जो सेठने,लियेरोहितास बुलाय।
फूल तोरला बागतें,बेगी उठ भज धाय ॥

समाजी वचन

दो०—सुनतवचनगये कुमरजी,जपत चले हरनाम।
सुन्दर वैध्यजो भावई काहू पै न मिटाय ॥
विश्वामित्रजो आहिबने,महा कारियल हाय।
फूलन बेलन बीचही,झटही गयौ लुकाय ॥
सो०—जबाहिकुमर रोहितास,फूलतोरनेकूं लग्यो।
भई देव की घात, डस्यो कारियल नागने ॥

राग गुंगधपान ॥

पुनि द्विजब्राह्मणबन्यो भज्यो रानीढिग आयो।
हाय रानी रोहितास बागमें नागने खायो ॥ नीलो भयो शरीर जहरछायो सब अंगा। रोयेते कहाहोय बेग लेचलिये गंगा ॥ रानी खाय पछारहाय बिघने कहा ज्जु कीनी। परदेशनमें लाय विपति आसिइमको दीनी ॥ पिता सेठते कहूं दुःख उन्हें होगा भारी।

छूटे तिनको भजन होय महा भारी ख्वारी ॥ रोवत रानी भजी तुरत सुतके ढिंग आई। देख कुमरको हाल गिरी धरणी मुरझाई ॥ होनी नाय मिटायकर्म की रेखा न्यारी। सुन्दर वैद्य सहाय करै गिरिवर गिरधारी ॥

लावनी।

रखलिया गोदमें शीशबागके बीच त्रियारोवै। हायदुकतो मुखसे बोल अरे मेरे लाल धरणिकैसे सोवै ॥ कुछ कहना होयतो कहो करू मैं कैसे रहूं मैं कैसै। मेरे इकलौता सुकुमार अकेली छोडजाय मोय कैसे ॥ ले चलिये अपने साथ दगानहीं परदे शन में दीजे। और कैसे जीवै भूप सुनतही कूप माहिं गिर परिये॥ चौपाई॥ विधि तैंने यह कहाकीनों। मेरो छीन लाल क्यों लीनों ॥ करोदयाकुमर सुनों अर्ज हाय तेरी मात रोय तन खोवै ॥ कुछ भयो कुमरको होश हेतजाको हस्ति लगाजोभारी। यों कहन मातसे लगो अरी सुन कर्मनकीगति

न्यारी॥क्यारुदनकरेते होय विकृत: अंकनासिटत मिटाई। मेरी रामराम लेमाय दीजैसमझाय भूपके ताई॥ चाहे लाख बिपत परजाय सत्यकोहरगिज़ त्यागे नाहीं ॥ चौपाई ॥ को पुत्र कौन महतारी। मिथ्या संसार असारी॥ ढर जाय हवाकेलगओस को मोती काहिको पोवे ॥ धरलियो० ॥हर माया काम ओर क्रोध लोभ जग चार लोहकी बेडी। किसकी सुख सम्पत भई गये योंही अन्त चढ़के पेडी ॥ जाके उदय अस्तलों राज योंही क्षण भये राखकी ढेरी। मेरी मेरी कहगये अरी यह मेरीभई न तेरी ॥ चौपाई॥जब हुक्म धनीकोआवे। तब सिर धुनर पछतावे ॥ लुटजांय दशों बाज़ार सुनो फिर रोनेसे क्याहोवे।धरलियो० ।गंगाजलतुलसी पात आन मुख भीतर डारजो दीजे। उस हरिको सुमरन करूं तरूं भवधार सुखसे पीजे॥ छोडासब यहां का ठाट हाट जाने कहां जायकेखोलूं। सोपे नहीं बोले जाय घिर आयोकण्ठकैसे में बोलूं ॥

चौ०—मेरी हाथ जोर सुनों माता । सुन्दरजग जीवत नाता ॥ लेओ बोल भूपते कहो लाशमेरी अब गंगा कूं ढोवे ॥ धर० ॥

समाजी वचन ।

दो०—कुमर गये वैकुण्ठको, रानी खात पछार ।
सिरधर मरघटको चली, संगनहीं कोईनार ॥

वार्ता—रानी कुमरकी लाशको लेकर गंगापर आईऔरराजा को बैठादेखकर हाथजोडकरबोली आज ये बाग में सर्प के काटने से मृत्युहोकरमो अभागनसे मुखमोडकर चलादिया जैसी आपकहो तेसी मैं करूं ॥

सो०—हाथ जोड सिर नाय, रानी राजातेकह्यो ।
दीजै याहि जराय, पुत्र तुम्हारो अहि डस्यो ॥

राजा वचन ॥

सो०—सुन रानी मेरी बात, मैं सतकूं त्यागू नहीं ।
पांच टका धर हाथ, जब फूंको तसकुमरको ॥

रानी वचन लावनी

कंथजी अर्ज सुनो मेरी । हाय मैं बिपताने घेरी ॥
॥ टेक । परदेशन में आयके बुरी करी करतार ।
पुत्र बिछोयो विधिने कियो बीच हृदय हुआ पार ॥
हांय करूं प्रानन की ढेरी ॥ कंथजी ० ॥ टेक ॥
पांच टका तुम मांगते मोपै नहीं छिदाम ।
पानी भर गुजरान करत हों सेठ बिचारे के धाम ॥
चितौ नेक पति मोतन हेरी ॥ कंथजी० ॥टेक ॥
ईंधन इकठौरा करूं चिता चिनूं दऊं आग ।
पांच टका करो माफ प्राणपति फूटे मेरे भाग ॥
हुक्म करो बेगहोत देरी ॥ कंथजी अर्ज० ॥ टेक॥
मैं चाकर हूं श्वपच को सुन रानी मेरी बात ।
बिना करालिये फूकनजोदऊंतो धर्म मेरो अबजात॥
मान कही सुन्दरि तू मेरी । कंथजी अर्जसुनोमेरी ॥

राजा वचन कवित्त ।

मेरेकुछ हाथनहींरानी मेरीबातसुनोमरयोपुत्रजो पैतो भलेंड मरजानदे। धर्म नहीं छोडूमैं तो चाकरहूं

चूहरेको संग चलै सत्य रानीसुनो कानदे॥होनहार नाहिं मिटे लाखों जतन करो क्योंनदेके पाहिलपांच टका पीछे चिता ठानदे। सुन्दर जहान बीच अक्षर न रहे कोई सबकाल खाय बीन कालहालबानदे॥

समाजी वचन

दो०—राजा ने मानी नहीं, रानी भई लाचार।
पांच टका के मोल में, चूंदर दई उतार॥

सो०—रोवत जार बेजार, फूंकत प्यारे लाल को।
बुरीकरी करतार, सुन्दर विधि अक्षर अमिट॥

रानी वचन रागझंगपान

रानी करत विचार कहा कैसे घरजाऊं। सिरऊपर नाहिं चीर नगन तन लाज लजाऊं॥चार घड़ीदिन अभी बैठकर यहीं बिताऊं। रात जभीहै जायअघर उठकर घर जाऊं॥ सक्की को मठ दूर सडकतेदूरहै न्यारो। ताभीतर धसगई विचारी लैन सहारो॥ दिनभर मिलो न अन्न विपति हरि दीनी भारी। सुन्दर झपगये नैन नींद आई दुखकारी॥

समाजी वचन राग जंगलपान

विश्वामित्र अब आय रचौ एक चरित्र अपारा। व्याघ्र बदन भये जाय पुत्र एक वैश्यकामारा॥धर रानीकेनिकट अचकछुप मृतकासिधारा।रक्तलगाय शरीर त्रिया कर डाकन डारा॥पुनि मुनि मग मग मांझ आयो पुरके पासा।सीस नाय करजोरवचन मुख आहित प्रकाशा॥ सत्तौ के मठ भूप आइएक डाकिन नारी। सुत एक देखत भक्यौ अर्ज यह सत्य हमारी॥नृप को ऐसो धर्म वेद श्रुति कहत पुकारी। सुन्दर पालन करेपुत्र सम प्रजा विचारी॥

दो०—कलुआ सुपचह बोलके,कह्यो वचननृपराय।
जल्द जाय डांकन हनो,सत्ती मठपै जाय॥
सुनत वचन कलुआ चलो,आयो मठकेमांय।
जायकह्यो हरिश्चन्द्रते,व्योरे वार सुनाय॥

सुपच वचन

सो०—सुनरे हरिया भूप, डाकिन मठ बैठी दबकि।
करदे रूप कुरूप, सीस काटला ग्वक्ते॥

पद-खड्ग काढि नृपमठकूं धायो ॥ खड्ग ॥ टेक ॥ सोवै सती नारि तारासी नग्न शरीररक्तालिपटायो । केशपकरि लीने नृप गहिकर दे ललकारहि शोर मचायो ॥ लखि त्रियकोतन चकितभयानक यहतोहै मेरी नारी । होयतो होय धर्म नहीं छांडों कर्मनकी गत कछु टरत नटारी ॥ गृह छूटो और सर्प डस्यो सुत को जाने अब कैसी होई । सुन्दर वेद्य सत्य नहिं छोड़ू सुत दारा धन रहै न कोई ॥

॥ समाजी वचन ॥

दो०-नृप ठाडो कर केश गहि, हाथ नग्न तलवार ।
थर थर कांपै तिय बदन, रोवै जार बेजार ॥

वार्त्ता-रानीका विलापकरके श्रीविष्णु भगवान कीस्तुति करना और राजाका रानीके केश पकड कर झुंझलाना और मठसे बाहर घसीट लाना रानीका ईश्वर से विनय करना ।

रानी वचन ।

लावनी-मेरी टेर सुनो भगवान भक्तहितकारी ।

मैंनेकरी कौनतकसीरजोऐसीमारी॥टेक॥तजपुरी अजोध्या धाम यहांहम आये। नृपभयेसुपचकोनीर महादुख पाये॥ गनिकाके हाथ बिकीमैं दुखिया नारी। अब सेठकी करतीटहल विपति कीमारी॥ मसरहेंप्राण चाहेंजांय कंथपर रहो सत्यब्रतधारी। मेरीटेर सुनों महाराज कृष्णगिरधारी॥ बेटा मेरो रोहितासनागने खायो। जिसे अपनेहाथोंआजमैं गंग बहायो॥ अब सुनोंमेरे महाराज खड्ग मेरे मारो। जीनेसे मरना ठीकन तरस विचारो॥किया पुत्र रामने छीन बिपतदई भारी। मेरी टेरसुनों०॥ जीनेकी तजो तुम आस सत्य सुनोंरानी। तुम्हें मारमरूं मैं आप यहीडर ठानी॥ अब चलोपुत्रके पास स्वर्गको प्यारी। हम भी पीछे से फेंट बांध करें त्यारी॥ निश दिनयोंहीं आवें जांयसड़कमग जारी। मेरीटेर०॥ सुनों देके सहस्र कान कृष्ण बनवारी। बिन तुझेमैं गर्दन मरूं खड़गपरतारी॥ सुन्दर प्रह्लादपाक नाम वेदकहैं चारी। मेरीटेर०॥

सुनो भगवान० ॥

समाजी वचन ॥

दो०—लोक चतुर्दश थर हरे, कांपे दिग्गज शेष ।
विष्णु बोल नारदलिये, सुनों पुत्र संदेश ॥
सो०—परी भक्तपै भीर, मृत्युलोक जाओ पुत्रतुम ।
महादास तनपीर, हालन लाग्यो स्वर्गसम ॥
दो०—बेगि जाओ नारदकुमर, वचन हमारोमान ।
कहो भूप हरिचन्दते, तजो त्रियाको पान ॥
नृप काटे त्रिय शीशको, करकृपाणगहिघोर ।
रोवत रानी डर विवश, हायहायकर शोर ॥
अस कहियोतू भूपतें, सुनके तेरी बात ।
सत्य भयो पूरो तेरो, धन्य भक्त कुशलात ॥

समाजी वचन ॥

दो०—नारदमुनि पहुंचे तहां जहां भूप हरचन्द ।
खड्ग पकड़नृपतेकह्यो क्योंभईतबमतिमन्द ॥

नारद वचन ॥

पद—मानों कही हमारीअरेनृपमानोंकहीहमारी ।

॥ टेक ॥ गऊ ब्राह्मण बालक नारी इन्हें बधे हत्या भारी। महा घोर मझधार नर्क परो देखौ हृदय विचारी ॥ नारि ब्याहता को जो मारे ते अति दुष्ट अनारी। तुमतो सतवादीहो राजा क्यों अनरीति विचारी॥ यह तो नारि तिहारी प्यारी कांपतगात विचारी। कहा कियो अपराध त्रिया ने जाकरो खड्ग प्रहारी ॥ भयो सत्य तुमरो नृप पूरण धन्य कूख अवतारी। सुन्दर छोड देउ रानीको व्यर्थ कहा बुद्धि विचारी ॥

राजा वचन ॥

दो०—हे ब्राह्मण सुन बावरे, हत्या कैसी होय।
इसे हनूं सतना गिनूं, क्या समझावे मोय॥
सत्य कह्यो प्रण मैं गह्यो, भूलूं नाहिं हरनाम।
सुपच गेह धन्धो करूं, भरूं नीर लखश्याम॥
सो०—सुपचको खायो नौन, हूमैं वाको टहलुआ।
कहौं वचन मुख जौन, झूंठो होय न स्वप्नमें॥
दो०—तू ब्राह्मण कहा जानिहै मांगन खानीजात।

सुन्दरजाओ लाख चहै, रहो सत्य यकसाथ॥

सो०—यहडाकिनअतिघोर, सुतखायोसाहूकारको।

स्वामी आज्ञा मोर, सुन्दर वैद्यसो पापक्यों॥

नारद वचन।

दो०—रानीको नृप छोड तू, कही हमारी मान।

नारद ऋषिममनामहै, विष्णुवचन परमान॥

॥ समाजी वचन ॥

दोहा—वचन अनेकन मुनि कहे, नृपने मानी नाथ।

सुन्दर तब प्रगटे हरी, भक्तवत्सल यदुराय॥

चतुर्भुजी प्रभु कर बदन, प्रगटे भूप अगार।

धन्य २ सुत धन्य तुम, सुन्दर भक्त हमार॥

सो०—कही जो मेरी मान, रानी को नृप छोडदे।

तू है भक्त सुजान, मैं प्रसन्न तोपै भयो॥

दोहा—कह्योविष्णु सुनियेनृपति, सत्यभयो तवपूर।

[illegible] के बीच में तुम भक्तनमें सूर॥

॥ विष्णु वचन राग कालिंगडा॥

स[illegible] [illegible], [illegible] स्वामी [illegible] बोले बैन। धन्यहरि

[illegible] [illegible] [illegible] तुम्हैंन॥ सत्य नर जे सुख

हि [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] भाषत जो वदनते ते

परत भवकूप॥कैसे छांडों कर त्रियापै यह तिहारी नार। तुमसरीखो भक्त दूजो और नासंसार॥ मार के कहा सुखहि पावोकीजिये निरधार।भक्तवत्सल नाम मेरो वेद गावें चार॥ अब चलो सुतधामलेरे विष्णुमेरो नाम। सत्य तेरो भयो पूरण मिलहि स्वर्गहि धाम॥पुष्पको ये विमानठाडो यामे बैठोआय। कहत सुन्दरराज नृपतुम अटलकीजे जाय॥

॥ राजा वचन ॥

दो॰—दीनबन्धु भगवान प्रभु, सत्य देव महाराज।
पुत्र जिवाओ ये दोउ, सफल होय ममकाज॥

॥ समाजी वचन ॥

दो॰—कहि ऐसे नृप हरिचरण, गिरो महा हर्षाय।
सुन्दरवेदसो मन्दमति सोसुख कह्योनजाय॥
वैश्यपुत्र औ भूप सुत नाम तासु रोहिताश।
हरि इच्छाते जी परे,महासुख वचन प्रकाश॥
पुत्रनामरोहितासजोहि,और नृपतिहरिश्चन्द्र।
रानी सहित जो जगपरे,महासुखी आनन्द॥

राजा वचन कवित्त

दोउकर जोर नृपमगनभयो सोमन अति अहार शब्द कर विनती उचारी है। ऐहो प्रभु धन्य मोहि धन्यमेरे भागनकोजो प्रभुदर्शदियोजान दासमुख सारी है॥ आवत ना ध्यान बीच ईशहू के ध्यान धरे निशिदिन प्रेम औ निज तपकोहारीहै। सुन्दर बदन मृदु हँसन दसन प्रिय कोटिन जनम लखि वारितन डारी॥

राजा का स्तुति करना

आज मोसम और जक्तहि नाथ भक्तहे धन्यको। देव देवन प्रतिहि स्वामी लोक लोकन पर्नको॥सह समुखसे शेष हारे बेद पार न पावहीं।एकाग्र चित्त से प्रभु तुम्हें सनकादि शंकर ध्यावही॥घटहि घट सर्वज्ञ व्यापक जलहि थलके रूपमें।पतित सुन्दर कितिक तारे कहा तुच्छक भूप में॥

रोला छन्द

जय कृपालु जक्त चिन्तामणि सर्व लोक कारण करणं। महा अगाध पार नहिं महिमा अखिलनाथ भवभयहरणं॥छद्म सर्वमर्वज्ञशिरोमणि कमलवदन

श्यामल वरणं । सोहत लोल अमोल गोल हरिमाल मणिन शुभतन धरणं ॥ सुर मुनि नायक दीन सहायकपारब्रह्म श्रीरमावरं । दुष्टन घालक ब्रजजन पालक वृन्दा विपिने केलिकरं ॥ जगन्नाथ जगदीश दयानिधि पुरुषोतम पृथ्वी ईशं । सुन्दर सुतदारा नृपति भुआरा जय २ हरि सुरपति धीशं ॥

विष्णु वचन ।

दो०—जो मांगे सो मांग नृप, तू मोसे वरदान ।
अटलराजकर स्वर्गमें, ममपद धरकरध्यान ॥
चलो नृपति वैकुण्ठको, बैठो पुष्प विमान ।
जय२धुनि सब मुनिकरें, हर्ष अप्सरा गान ॥
सो०—सहित पुत्र औ नारि, चलो भूप मम स्वर्गको ।
अति आनन्द उरधार, बैठो पुष्प विमानमें ॥

राजा वचन ।

दो०—सुनो नाथ ममअर्जको, स्वपचसंग बिननाथ ।
स्वर्गचलोतो सुपचहु, और अवधसुखदाय ॥
सो०—संग सुपच जो जाय औरअयोध्यामपुरी ।
भली भांति सुख पाय तोमैं चलिहों स्वर्गको ॥

विष्णु वचन ॥

दो०-विष्णु कह्यो सुत धन्यतुम मानी तुम्हरी बात।
सहित सकल परिवारयुत चलोश्वपचलैसाथ

समाजी वचन

सो०-बैठे पुष्प विमान श्वपच सहितनगरी दोउ ।
करतचलेसुखगानकुटुम्बसहितहरिपुरनृपति॥

दो०-जगतधन्यअसनिपुणनरकरताविष्णुगुणगान।
सुन्दरमूढ ते असुरनर करें और को ध्यान ॥

चौ०-धन्य जगत जननी वानरकी। करतभक्त ऐसी दृढ हरकी॥और कौन या जगकेमाही। बिना विष्णु भवको सुखदाई ॥ भक्त वत्सल दीनन के नाथा। सदा भक्त शिर राखत हाथा॥योगीजन जपतप जिहं ध्यावें। शंभु रटत अज ध्यानन पावें ॥ सो प्रभु प्रेम विवश भगवाना।भक्त अधीन वेदमुख गाना ॥ जे नरतन धरि जपके माहीं। जपत नहरि को नाम सदाहीं ॥ तिनको श्वान समान निहारी। सकल मुनीजन देउ धिक्कारी ॥ हरि विमुखन संगत

जे करि हैं॥ विमयथतेउनरकाविचपरिहैं॥ब्रजभीतर शुभ गाम सुहाई। नाम मनसुख कहै सब कोई पास करहला गाम सुहाई। जाको यश मुनिवेदन गाई॥ सुन्दर वैश्य विप्रतन पायो। नम्रकरहलावास सुहायो॥ सब मुनिजन कविजन को चेरो।क्षमियो प्रभु अपराधहि मेरो॥ मैं अजान बालक अज्ञानी। सकल दोषक्षमियोजनजानी॥ भक्तचरित्रयथामत गायो। सकल जन्मकोअघहिनसायो॥सीखैसुनैजो नर यहलीला।मिलै भक्ति अनुपम सुखशीला॥चार पदारथ सुलभ जो पावै। दृढकर पाठजो नर कोइ गावै॥ मैं तो पतित कृष्ण को दासा। सदा दीन हरि चरित विलासा॥

इति श्रीहरिश्चन्द्र लीला

❀ समाप्तम् ❀

सिर्फ टाइटिल पेज " एल० पी० नागर प्रेस " मथुरा में छपा।